स्वराज्य अधिकारी सो विश्वराज्य अधिकारी

Brahmakumaries

Presentation

B. K. Prafulchandra

हम तीन प्रकार के राज्य अधिकारी बनते हैं और तीनों राज्य की राजनीति को जानते हैं

१. संगम युग के स्वराज्य अधिकारी

२. आधा कल्प सतयुग त्रेता के विश्वराज्य अधिकारी

३. द्वापर से ले कर स्टेटराज्य के अधिकारी

स्वराज्य अधिकारी अर्थात

- हर कर्मेन्द्रिय पर अपनी ज्ञान और योग की शक्ति द्वारा अपना अधिकार और आधिपत्य हो
- प्रकृति को अधीन कर विजयी बनने वाला प्रकृतिजीत
- बेगमपुर राज्य का बेफिक्र बादशाह, जिसका अनुभव श्रेष्ठ और सुखमय हो
- सदा रूहानी नशे में और मौज ही मौज में रहने वाला, वो कभी मूंझता नहीं हैं

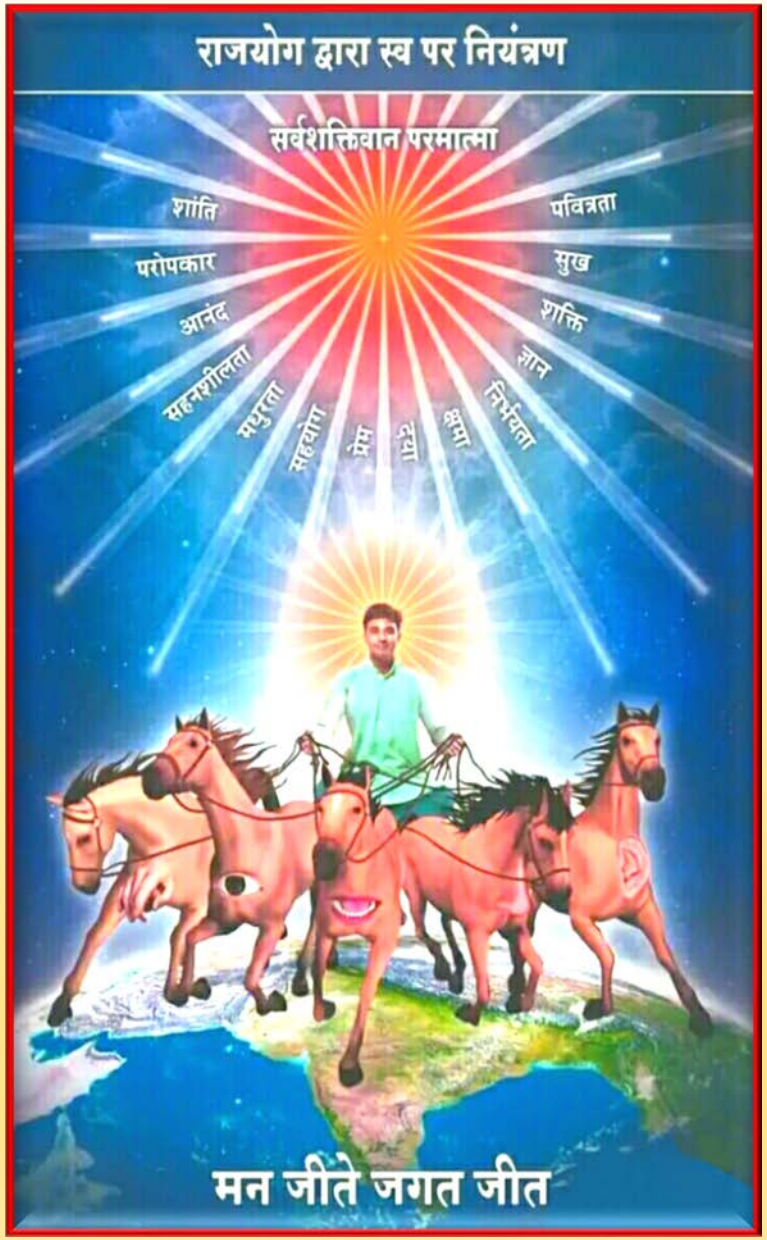

विश्वराज्य अधिकारी अर्थात

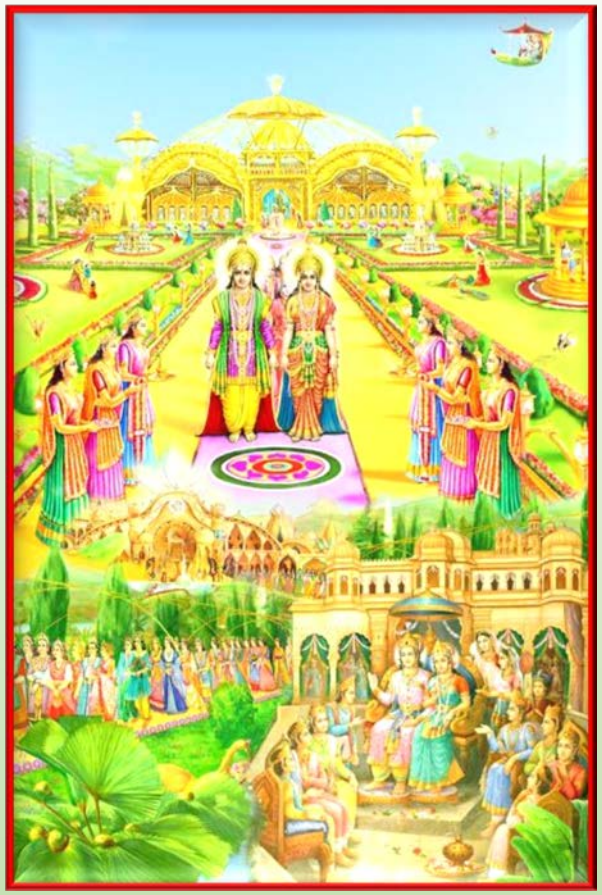

- स्वयं भी सर्व में संपन्न एवं औरो को भी सम्पन्नता में रखनेवाला; सुख, शांति, आनंद, प्रेम सर्व खजानों से भरपूर
- अपनी राजसत्ता द्वारा माता-पिता के स्वरूप में अपनी प्रजा की पालन करने वाला
- १६ कला सम्पूर्ण अर्थात सर्व कलाओं में निपुण
- सर्व अनुभव करे की यही श्रेष्ठ आत्मा हमारे पूर्वज हैं

वर्तमान समय के लक्षण के आधार पर भविष्य का लक्ष सिद्ध होगा

यहाँ आत्मस्मृति के तिलकधारी
वहाँ विश्वराज्य के तिलकधारी

यहाँ अकालतख़्त और बापदादा के दिलतख़्त धारी वहाँ राजतख़्त धारी

यहाँ पवित्रता और विश्वसेवा की जिम्मेवारी के ताजधारी वहाँ पवित्रता के और रत्नजडित ताज के डबल ताजधारी

सच्चा, सम्पूर्ण और सर्वांगी राजयोगी ही विश्वराज्य का अधिकारी

राजयोगी माना.....

सहजयोगी..... कर्मयोगी..... ज्ञानयोगी.....

बुद्धियोगी..... निरंतरयोगी.....

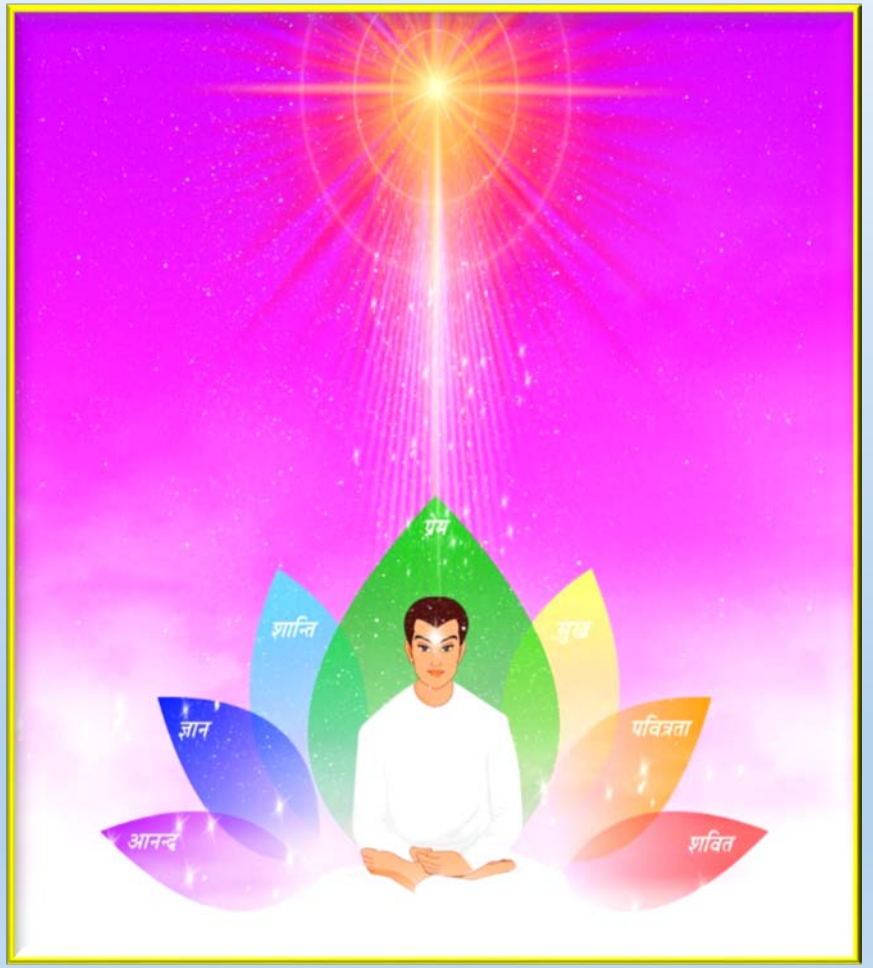

ॐ शांति

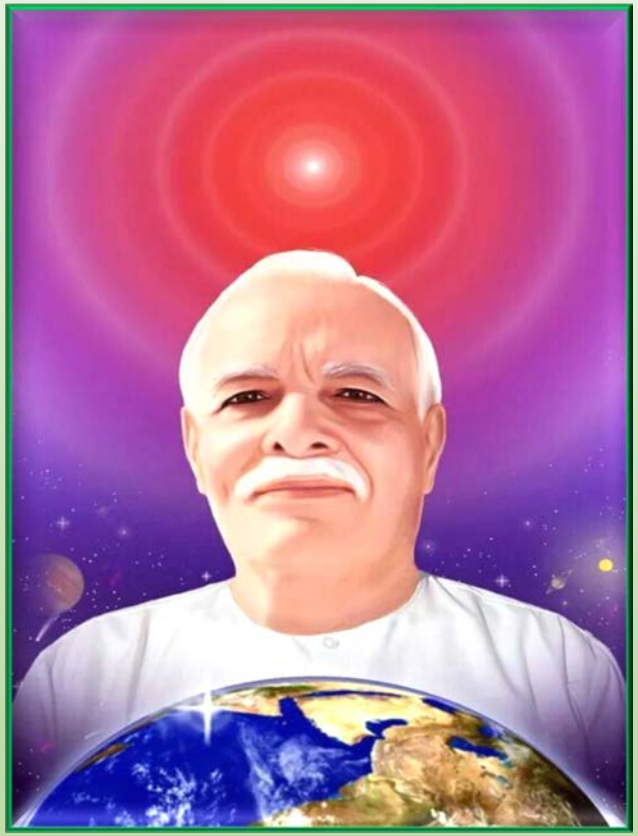

धन्यवाद